इन्क़िलाबी नज़र

आवाज़ ... आम आदमी की

लखनऊ, रविवार, 16 फरवरी, 2025

वर्ष : 17 अंक : 164 मूल्य : 4-00 रुपया पृष्ठ : 12+4

"हताश न होना सफलता का मूल है और यही परम सुख है। उत्साह मनुष्य को कर्मों में प्रेरित करता है और उत्साह ही कर्म को सफल बनाता है।"

- वाल्मीकि

तापमान - अधिकतम 29.1°C (+2.3) न्यूनतम 10.1°C(-1.2) सेंसेक्स 76,939.21 (-199.76) निफ्टी 22,929.25 (-102.15) सोना 86,220 चांदी 1,00,500 मुद्रा - डालर 86.61 दिरहम 23.58 रियाल 23.09

एरा विश्वविद्यालय में जन्मजात हृदय रोगों पर हुई संगोष्ठी

विशेषज्ञों ने बताए रोग के कारण और निवारण

लखनऊ (सं)। एराज लखनऊ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल व एरा विश्वविद्यालय के हृदय विज्ञान विभाग ने जन्मजात हृदय रोगों के बारे में जागरुकता बढ़ाने, समझने और उपचार रणनीतियों को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से एरा यूनिवर्सिटी के छात्रों और संकाय सदस्यों के लिए शनिवार को जन्मजात हृदय रोगों पर एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में चिकित्सा पेशेवरों, वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को एक मंच पर लाया गया ताकि सीएचडी से प्रभावित बच्चों के लिए निदान, उपचार और सहायता में नवीनतम प्रगति पर चर्चा की जा सके।

मुख्य वक्ता के तौर पर नीदरलैंड इरास्मस यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर के कार्डियोथोरेसिक सर्जरी विभाग के प्रोफेसर डॉ. पीटर वान डी वोस्टिजेन मौजूद थे। यह अतिथि व्याख्यान एरा विश्वविद्यालय और इरास्मस विश्वविद्यालय चिकित्सा केंद्र, इरास्मस एमसी, नीदरलैंड के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) के एक भाग के रूप में आयोजित किया गया था। सीटीवीएस विभाग के प्रोफेसर डॉ. खालिद इकबाल और एरा विश्वविद्यालय के बाल चिकित्सा विभाग के डॉ. अभिनव अग्रवाल इस वर्ष के अंत में जन्मजात हृदय रोग में प्रशिक्षण के लिए इरास्मस एमसी, नीदरलैंड का दौरा करेंगे।

कार्यक्रम की शुरुआत एरा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. (डॉ.) अब्बास अली महदी के सम्बोधन से हुई। अपने भाषण में प्रो. महदी ने कहा कि 1000 जीवित बच्चों में से 8-12 बच्चों को जन्मजात हृदय की समस्याएं होती हैं, जिसका अर्थ है कि भारत में हर साल लगभग 2.5 लाख ऐसे बच्चे पैदा होते हैं। इसके बाद बाल रोग विभाग के डॉ. अभिनव अग्रवाल ने गंभीर जन्मजात हृदय रोग के दृष्टिकोण पर व्याख्यान दिया। उन्होंने जन्मजात हृदय रोग की विभिन्न स्थिति और उनके संबंधित लक्षणों के बारे में चर्चा की। उन्होंने बताया कि लगभग 60 लाख की आबादी वाले लखनऊ में हर साल करीब 1200 बच्चे जन्मजात हृदय रोग के साथ पैदा होते हैं। एरा विश्वविद्यालय के कार्डियोलॉजी विभाग के डॉ. बशीर अहमद मीर ने वयस्क जन्मजात हृदय रोग वाले रोगियों में ट्रांसकैथेटर हस्तक्षेप पर व्याख्यान दिया, जहां उन्होंने जन्मजात हृदय रोग की उपचार रणनीतियों के बारे में चर्चा की सीटीवीएस विभाग के डॉ. खालिद इकबाल ने जन्मजात हृदय रोग सर्जिकल हस्तक्षेप के संकेत और समय पर अपना व्याख्यान दिया, जहां उन्होंने जन्मजात हृदय रोग की विभिन्न प्रस्तुति के बारे में चर्चा की और इन रोगियों को सर्जिकल हस्तक्षेप प्रदान करने का सही समय क्या है।

डॉ. पीटर वैन डी वोस्टिग्ने ने न्यूनतम इनवेसिव तकनीकों पर बात की, जिनका उपयोग जन्मजात हृदय रोग वाले बच्चों में किया जा सकता है। यह संगोष्ठी जन्मजात हृदय की स्थिति के साथ पैदा हुए बच्चों के लिए देखभाल की गुणवत्ता और जीवन की गुणवत्ता दोनों में सुधार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कार्यक्रम में एरा विश्वविद्यालय के संकाय, शोध विद्वानों और छात्रों ने भाग लिया।